डॉ. मीरा कुमारी

संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना

ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार

ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com

Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 13-07-2020

विषय- वैदिक साहित्य

वैदिक भाषा

साधारणतया ऋग्वेद आदि वैदिक ग्रंथों की भाषा को संस्कृत भाषा ही समक्ष लिया जाता है। लेकिन ऐसा नहीं है क्योंकि ऋग्वेद आदि ग्रंथ जिस भाषा में उपलब्ध होते हैं उस भाषा को वैदिक भाषा कहा जाता है । यह संस्कृत भाषा से भिन्न भाषा है। अतः वैदिक भाषा का सामान्य परिचय देना आवश्यक है।

भाषा का विशेष रूप से अध्ययन करने वाले जानते हैं कि आज हम जिस हिन्दी भाषा को बोलते हैं वह भारोपीय परिवार की भारतीय आर्य शाखा में विकसित एक आधुनिक भाषा है।

भारतीय आर्य भाषा का विकास प्राचीन काल से आज तक इस प्रकार हुआ है।

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा - प्राचीन भारतीय आर्य भाषा में वैदिक और संस्कृत भाषाएं आती है।
2. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा- इसमें पाली प्राकृत और अपभ्रंस भाषाएं आती है।
3. आधुनिक भारतीय आर्य भाषा- इसमें हिंदी मराठी गुजराती बांग्ला आदि भाषाएं आती है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि भारत में जो भाषा बोली जाती है। उसे भारतीय आर्य भाषा कहते हैं। जिस भारतीय आर्य भाषा में ऋग्वेद आदि रचनाएं उपलब्ध होती है अर्थात वेद जिसमें मिलते हैं, वह भाषा वैदिक भाषा कहलाती है। भारत में सबसे पहले यही भाषा बोली जाती थी। इसके बाद जो भाषा प्रयोग में आई उसे संस्कृत कहते हैं । संस्कृत के बाद पाली -प्राकृत, पाली- प्राकृत के बाद अपभ्रंश और उसके भी बाद आधुनिक भाषा हिंदी आदि का विकास हुआ है । अतः वैदिक और संस्कृत यह दो भाषाएं हैं और दोनों में कुछ समानता अवश्य है किंतु इन दोनों को एक ही भाषा मानना अज्ञानता का ही सूचक है। वैदिक साहित्य के पाठकों को यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखनी चाहिए। क्योंकि वैदिक भाषा में उपलब्ध साहित्य ही वैदिक साहित्य है। वैदिक साहित्य में ऋग्वेद, सामवेद यजुर्वेद और अथर्ववेद तथा ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद और वेदांग आते हैं।

वैदिक भाषा का परिचय

वैदिक भाषा का समान रूप से परिचय देना जरूरी है। वैदिक भाषा की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं इस प्रकार है:

1. वैदिक भाषा में अ, इ, उ आदि स्वर वर्णों का उच्चारण ह्रस्व, दीर्घ, और प्लुत- भेद से तीन प्रकार का होता है अर्थात प्लुत उच्चारण में देर तक उच्चारण किया जाता है। जैसे-'आसी३त् और विन्दती३' यहां ३ की संख्या से तात्पर्य है कि ई को, दीर्घ से भी अधिक देर तक उच्चारण करता है।
2. वैदिक भाषा में ऋ की भांति है ऌ भी एक स्वर है।

3. वैदिक भाषा में उदात्त, अनुदात्त और स्वरित- इन स्वरों का प्रयोग उच्चारण में होता है । इनमें उदात्त स्वर का बहुत महत्व है। उदात्त के स्थान पर अनुदात्त उच्चारण करने से शब्द का अर्थ ही बदल जाता है।
4. वैदिक व्यंजनों में ळ् और ळ्ह व्यंजन भी है। 'इळा' और 'अग्निमीळे' शब्दों में इनका प्रयोग दिखलाई पड़ता है ।
5. प्राचीन वैदिक भाषा में 'ल्' के स्थान पर प्राय: 'र्' का प्रयोग मिलता है। जैसे- 'सलिल' के स्थान पर 'सरिर' मिलता है ।
6. वैदिक भाषा में शब्दों में होने वाली संधि के नियम बहुत शिथिल है। कहीं संधि हो जाती है और कहीं संधि -योग्य स्थलों पर भी संधि नहीं होती और दो स्वर साथ-साथ आ जाते हैं। जैसे- तित उ (यहां त में अ और उसके बाद उ है संधि नहीं हुई है) गो ओपशा(यहां भी दोनों ओ पृथक-पृथक ही है संधि नहीं हुई है) ।
7. वैदिक भाषा में शब्द रूपों में बहुत ही अनेकरुपता है। उदाहरण के लिए प्रथमा विभक्ति के द्विवचन में देवा और देवौ- दोनों रूप मिलते हैं। इसी प्रकार प्रथमा विभक्ति बहुवचन में जना: और जनास:, तृतीया विभक्ति बहुवचन में देवै: और देवेभि: आदि दो-दो रूप मिलते हैं । इसी प्रकार अन्यत्र भी कई-कई रूप मिलते हैं।
8. ऐसी ही अनेकरूपता धातु रूपों में मिलती है। एक ही कृ धातु के लट् लकार प्रथम पुरुष में कृणोतु, कृणुते, करोति, करति और कुरुते आदि कई रुप मिलते हैं।
9. धातुओं से एक ही अर्थ में अनेक प्रत्यय लग जाते हैं ,जैसे- एक 'तुमुन्' प्रत्यय के अर्थ में ही- तुमुन्, से, सेन्, असे, असे न्, कसे, कसे न् और अध्यै, अध्यैन्, कध्यै, कध्यैन्, शध्यै, शध्यैन्, तवै, तवैड् और तवेन्- ये 16 प्रत्यय मिलते हैं। यही बात अन्य प्रत्ययों में भी मिलती है।
10. वैदिक भाषा की एक अन्य विशेषता यह है कि उसमें ऊपसर्गो का प्रयोग स्वतंत्र रूप से भी होता है।

    उदाहरण के लिए- 'अभि त्वा पूर्व पीतये सृजामि सौम्यं मधु।' ऋग्वेद -1/19/9

    यहां अभि उपसर्ग का प्रयोग सृजामि क्रियापद के साथ न होकर स्वतंत्र रूप से हुआ है।

इसी प्रकार अन्य अनेक स्थलों पर भी यह देखने को मिलता है। संक्षेप में, उपर्युक्त विशेषताओं को ध्यान में रखकर जब हम वैदिक भाषा की तुलना संस्कृत भाषा से करते हैं तो हमें इन दोनों भाषाओं में पर्याप्त भिन्नता दृष्टिगोचर होती है ।